Remove Watermark Wondershare PDFelement

।। Twenty Eight Divine Names of Lord Vishnu ।।
(Shri Vishnu Asta Vinsati Nama Stotram)
।। श्रीविष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रं ।।

Swami Sandipendra Ji
942594119
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

अर्जून ने पूछा – केशव ! मनुष्य बार-बार एक हजार नामों का जप क्यों करता है आपके जो दिव्य नाम हों, उनका वर्णन कीजिये

Remove Watermark Wondershare PDFelement

श्री भगवान बोले– अर्जुन! मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, जनार्दन, गोविन्द, पुण्रीकाक्ष, माधव, मधुसूदन, पद्मनाभ, सहस्त्राक्ष, वनमाली, हलायुध, गोवर्धन, हृषीकेश, वैकुण्ठ, पुरुषोत्तम, विश्वरूप, वासुदेव, राम, नारायण, हरि, दामोदर, श्रीधर, वेदाङ्ग, गरुडध्वज, अनन्त और कृष्णगोपाल

इन नामोंका जाप करने वाले मनुष्य के भीतर पाप नहीं रहता। वह एक करोड़ गो–दान, एक सौ अश्वमेधयज्ञ और एक हजार कन्यादान का फल प्राप्त करता है। अमावस्या, पूर्णिमा तथा एकादशी तिथिको और प्रतिदिन सांय–प्रातः एवं मध्याह्न के समय इन नामों का भक्ति पूर्वक जप करने वाला पुरुष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।। 2–7।।

Wondershare PDFelement

अर्जुन उवाच

किं नु नाम सहस्त्राणि जपते च पुनः पुनः ।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशव ।।१।।

श्रीभगवानुवाच

मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम्।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्।। 2।।
पद्मनाभं सहस्त्राक्षं वनामालिं हलायुधम्।

Remove Watermark Wondershare PDFelement

गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्।। 3।।
विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम्।
दामोदरं श्रीधरं च वेदाङ्ग गरुडध्वजम्।। 4।।
अनन्तं कृष्णगोपालं जपतो नास्ति पातकम्।
गवां कोटिप्रदानस्य अश्वमेधशतस्य च।। 5।।
कन्यादानसहस्त्राणां फलं प्राप्नोति मानवः।
अमायां वा पौर्णमास्यामेकादश्यां तथैव च।। 6।।
सन्ध्याकाले स्मरेन्नित्यं प्रातःकाले तथैव च।
मध्याह्ने च जपन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते।। 7।।

इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीविष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Wondershare PDFelement